रजिस्ट्री सं० डी०—(डी)—73

REGISTERED NO.D-(D)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 21] नई दिल्ली, शनिवार, मई 24, 1980 (ज्येष्ठ 3, 1902)

No. 21] NEW DELHI, SATURDAY, MAY 24, 1980 (JYAISTHA 3, 1902)

इस भाग में भिन्न दी पृष्ठ संख्या जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . .	383
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	669
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	3
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई, अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	575
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खण्ड 2—विधेयक और विधेयक संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . .	—
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिसमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) .	1163
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	1459
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .	215
भाग III—खण्ड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	5799
भाग III—खण्ड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	267
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	39
भाग III—खण्ड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . .	2009
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	81

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुए

1—71 GI/80

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	383
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	669
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	3
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	575
PART II—SECTION 1.—Act, Ordinances and Regulations.	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committee on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1163
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1459
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	215
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service, Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	5799
PART III—SECTION 2.—Notification and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	267
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	39
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2009
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	81

* Folio No. Not Received.

भाग I—खण्ड 1
PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1980

सं० 36-प्रेज/80—राष्ट्रपति निम्नलिखित अधिकारी को उनकी उत्कृष्ट वीरता के लिये कीर्ति चक्र प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

मेजर सुखदेव सिंह (आई० सी०-26235) (मरणोपरांत)
पंजाब ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून, 1979)

24-25 जून, 1979 की रात बैरकों को चारों ओर से घेरने और केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर करने के लिए वहां एक इन्फैन्ट्री बटालियन भेजी गई, जिन्होंने जब सरकारी आदेशों का उल्लंघन करके बोकारो में शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया । शस्त्रागार में 400 बन्दूकें, 61 पिस्तौल, 24 निजी हथियार और 24000 राउंड गोलाबारूद था । बैरकों और शस्त्रागार की पूरी किले-बन्दी की गई थी । तारों की बाड़ लगाई गई और खाइयां बनाई गईं । छतों पर रेत के बोरों के बन्कर बनाए गए थे और बैरक की पहली मंजिल की खिड़कियों पर भी बन्कर बनाए गए । इस बटालियन की एक कम्पनी की कमान मेजर सुखदेव सिंह कर रहे थे । इन्होंने औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों को आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया लेकिन उन्होंने जवाब में शस्त्रागार और अन्य बैरकों से अन्धाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं । बार-बार अपील के बावजूद उधर से गोलियां चलती रहीं । सुबह 4.30 बजे अन्तिम अपील की गई लेकिन वह भी नामन्जूर कर दी गई और उलटे मेजर सुखदेव सिंह को चुनौती दी गई कि वे आगे बढ़ें और शस्त्रागार पर कब्जा करें । इसके बाद सेना ने फायर शुरू कर दी और शस्त्रागार कर कब्जा करने की कार्रवाई की सुबह लगभग 5.20 बजे जब मेजर सुखदेव सिंह अपने जवानों के साथ आगे बढ़े तो उन्हें एक गोली लगी और वहीं पर उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्रवाई में मेजर सुखदेव सिंह ने असाधारण साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

सं० 37-प्रेज/80—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को वीरता के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री देव राज चक्रवर्ती (मरणोपरांत)
जिला बचत अधिकारी,
राष्ट्रीय बचत संगठन,
बिजनौर,
उत्तर प्रदेश ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 21 सितम्बर, 1975)

21 सितम्बर, 1975 की रात लगभग 10 बजे रिवाल्वर लिए दो व्यक्ति प्रसूति-प्रशिक्षण केन्द्र, बिजनौर आए और उन्होंने केन्द्र की एक महिला प्रशिक्षणार्थी से मिलना चाहा । चौकीदार ने उन्हें मिलने की इजाजत नहीं दी जिस पर इन्होंने केन्द्र के प्रभारी अधिकारी और चौकीदार को धमकी दी ।

श्री देव राज चक्रवर्ती पड़ौस के मकान में रहते थे । शोर सुनते ही वे मकान से बाहर आए और स्थिति का जायजा लेने पर चौकीदार से तुरन्त पुलिस में रिपोर्ट करने को कहा । इतना सुनते ही एक व्यक्ति रिवाल्वर तान कर इनकी ओर लपका । श्री चक्रवर्ती ने इस खतरे की परवाह नहीं की और झपटकर उससे रिवाल्वर छीन लिया । इसे देख दूसरे व्यक्ति ने अपनी पिस्तौल से उन पर गोली चला दी जिससे उसी रात उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्रवाई में श्री देव राज चक्रवर्ती ने अदम्य साहस का परिचय दिया ।

2. 291101 कारपोरल विश्वनाथ शर्मा (मरणोपरांत)
वेपर फिटर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 दिसम्बर, 1977)

कारपोरल विश्वनाथ शर्मा आकस्मिक छुट्टियां बिताने के बाद अपनी यूनिट को लौटते हुए 6 दिसम्बर, 1977 को दिल्ली रेलवे जंक्शन पर उतरे । यहां से इन्हें जोधपुर के लिए रेलगाड़ी पकड़नी थी । इसी दिन लगभग 1.40 बजे एयर फोर्स स्टेशन जोधपुर के सारजेंट मांगे राम दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने पड़ने वाले कम्पनी बाग में से गुजर रहे थे । वहां उन्होंने देखा कि दो व्यक्ति एक सोए हुए व्यक्ति की जेब काट रहे हैं । सारजेंट मांगे राम ने जब उन्हें ललकारा तो दोनों ने उन पर हमला कर उन्हें बाड में धकेल दिया । संयोगवश कारपोरल

विश्वनाथ शर्मा भी उसी बाग में थे, वे सारजेंट मांगे राम की सहायता के लिए दौड़े। अपराधियों ने भागने की कोशिश की लेकिन कारपोरल शर्मा और सारजेंट मांगे राम ने उनका पीछा किया। इस पर गुरदीप नामक अपराधी ने एक छुरा निकाला और उसे कारपोरल शर्मा के पेट में घोंप दिया। सारजेंट मांगे राम उसी समय कारपोरल शर्मा को जयप्रकाश नारायण अस्पताल ले गए। बाद में उचित देख-रेख के लिए 17 दिसम्बर, 1977 को उन्हें मिलटरी अस्पताल दिल्ली कैंट ले जाया गया जहाँ अगले दिन घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गयी बाद में पुलिस ने अपराधियों को पकड़ लिया।

इस कार्रवाई में कारपोरल विश्वनाथ शर्मा ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और साथीपन की उच्च-भावना का परिचय दिया।

3. मेजर कन्हैया लाल शर्मा (आई० सी० 21179)
परा।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 अप्रैल, 1978)

मेजर कन्हैया लाल शर्मा इन्फैन्टरी स्कूल महू में प्रशिक्षक थे। 18 अप्रैल, 1978 की शाम को जब स्कूल मे एक फिल्म दिखाई जा रही थी तो सेंधमारों के एक गिरोह ने एक अफसर के कमरे में सेंध लगाने का प्रयत्न किया। मेजर शर्मा को कुछ सन्देह हुआ और वे वहां से एक छड़ लेकर बाहर निकले। बाहर निकलकर इन्होंने देखा कि अच्छे वस्त्र पहने हुए एक व्यक्ति अफसर के कमरे के बाहर खड़ा हुआ है और दूसरा व्यक्ति मोटर साइकिल के इंजिन को स्टार्ट किए हुए समीप ही सड़क पर खड़ा हुआ है। इन्होंने बरामदे में खड़े हुए व्यक्ति से पूछताछ की और उसका उत्तर संतोषजनक न पाकर वे मोटर साइकिल की तरफ बढ़े और मोटर साइकिल पर छड़ से प्रहार किया। इससे सेंधमारों के छक्के छूट गए। किन्तु इससे पहले कि वे बचकर भाग सकें, मेजर शर्मा ने उनमें से एक को पकड़ लिया और उनसे हाथापाई हो गई। शोरगल सुनकर उस स्थान के नजदीक के और लोग भी भागकर घटनास्थल पर पहुंचे और सेंधमारों को पकड़कर पुलिस को सौप दिया गया। बाद में उनकी पहचान करने पर पता चला कि वे उस गिरोह के सदस्य थे जो उस शहर में काफी समय से सक्रिय हैं और पुलिस उनकी तलाश में थी।

इस कार्रवाई में मेजर कन्हैया लाल शर्मा ने उच्च कोटि का साहस, पहलशक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. श्रीमती जादिंगी,
बुआरपुई विलेज ग्रुपिंग सेंटर,
जिला लुंगलेट,
मिजोरम।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 जुलाई, 1978)

2 जुलाई, 1978 को श्रीमती जादिंगी मिजोरम में लुंगलेट जिले के बुआरपुई गांव के पास के जंगल से लकड़ी लाने गई हुई थी तो वहां उसने लगभग 3 मीटर की ही दूरी पर एक बाघ देखा। पर वे इससे घबराई नहीं और तुरन्त अपनी कुल्हाड़ी से बाघ के सिर पर जोर से वार कर दिया। बाघ से संघर्ष में उनकी बाई बांह में चोट आ गई। बाघ लड़खड़ाता हुआ बगल की झाड़ियों में छिप गया। चोट के बावजूद वे बाघ को ताकती रहीं कि अगर बाघ उस पर फिर वार करे तो वह उसे दुबारा मार सके। लेकिन बाघ बाहर नहीं निकला। बाद में गांववालों ने बाघ को वहां मरा पाया।

इस कार्रवाई में श्रीमती जादिंगी ने अनुकरणीय साहस, सूझबूझ और उच्च कोटि के दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

5. कैप्टन जयन्त थापा (आई० सी–30365)
गोरखा राइफल।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 सितम्बर, 1978)

कैप्टन जयन्त थापा उस टीम के प्रभारी अधिकारी थे जिसे 2/3 सितम्बर, 1978 की रात को उत्तरी क्षेत्र में हमारी सीमा चौकियों के पास के क्षेत्र में सुरंग बिछाने का काम सौंपा गया था। इस काम को पूरा करने के बाद, कैप्टन थापा ने उस क्षेत्र की रक्षा करने वाले तीन दलों में से दो दलों की वापसी में सहायता की जो सुरंग बिछे क्षेत्र से आगे काम कर रहे थे। चौकी पर वापिस आने पर कैप्टन थापा को मालूम हुआ कि तीसरा रक्षा दल गलती से सुरंग वाले क्षेत्र में चला गया है। कैप्टन थापा ने स्थिति की गम्भीरता को भांपा और सुरंग वाले क्षेत्र की ओर दौड़े। वहां उन्होंने देखा कि एक अन्य रैंक जो भटक कर उस क्षेत्र में चला गया था तथा उसके दल के नेता की जो उन्हें बचाने के लिए आया था, सुरंग फटने से टांगे कट गई है। कैप्टन थापा सुरंग वाले क्षेत्र में गए और एक-एक करके दोनों जख्मियो को उठाकर उस क्षेत्र से बाहर ले आए।

इस कार्रवाई में कैप्टन जयन्त थापा ने असाधारण साहस, व्यावसायिक कुशलता और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

6. 5235877 नायक दिल बहादुर बुढ़ाठोकी
3 गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 सितम्बर, 1978)

2/3 सितम्बर, 1978 की रात में नायक दिल बहादुर बुढ़ाठोकी को तीन जवानों के साथ उस एक सैनिक टुकड़ी की सुरक्षा करने का काम सौंपा गया जो उत्तरी सेक्टर में एक स्थान पर हमारी एक सीमा चौकी के पास सुरंग बिछा रही थी। 3 सितम्बर, 1978 को वहां से वापस लौटते समय नायक दिल बहादुर बुढ़ा ठोकी और इनके तीन जवानों का दल गलती से सुरंग बिछे हुए इलाके में चला गया। सुरंग बिछी होने का पता न होने के कारण इनके दल का सबसे पीछे वाला जवान राइफलमैन कांसी राम गुरंग का पांव एक सुरंग मे पड़ गया और सुरंग फटने से उनका पांव उड़ गया। नायक बुढ़ाठोकी ने तत्काल स्थिति भांप ली और घायल जवान को वहीं पर बिठा दिया। इसके बाद ये अपने दूसरे साथी जवान को बाजू से पकड़कर सुरक्षित स्थान पर ले गए। फिर वापस सुरंग बिछे हुए क्षेत्र में आए और राइफलमैन थापा को भी, जो सदमा पहुंचने के कारण वहां से हिलने में असमर्थ था, अपनी बाहों

में उठाकर सुरक्षित स्थान पर छोड़ आए। इसके बाद घायल जवान को उठाने के लिए फिर वापस गए। इस बार इनका पांव भी एक सुरंग के ऊपर पड़ गया जिसके फटने से इनकी भी एक टांग उड़ गई।

इस कार्रवाई में नायक दिल बहादुर बुढ़ाठोकी ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. 4451150 सिपाही निर्भय सिंह (मरणोपरांत)
सिख लाइट इन्फैन्टरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 21 सितम्बर, 1978)

21 सितम्बर, 1978 को सिपाही निर्भय सिंह तीन ऐथलीटों के साथ क्रास कन्ट्री दौड़ पूरी करके लौट रहे थे। जब वे यूनिट लाइनों से लगभग 300 गज की दूरी पर थे तो प्रमुख ऐथलीट लांस हवलदार बच्चन सिंह पर अचानक एक जंगली हाथी ने हमला किया और उसे अपनी सूंड से पकड़कर उठा लिया। खतरा देखकर सिपाही निर्भय सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना चिल्लाते हुए जंगली हाथी से भिड़ गए। सिपाही निर्भय सिंह के ऐसा करने से हाथी क्रुद्ध हो गया और उसने लांस हवलदार बच्चन सिंह को दूर फैंक दिया और जोर से चिंघाड़ते हुए सिपाही निर्भय सिंह की ओर लपका। हाथी ने उन्हें अपनी सूंड में लपेट लिया और कई बार जमीन पर पटका और उनको वहीं प्राणान्त कर दिए।

इस कार्रवाई में सिपाही निर्भय सिंह ने अनुकरणीय साहस, असाधारण वीरता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. स्कवाड्रन लीडर पूरण चन्द्र सिंह रौतेला, वी० एस० एम० (9576),
एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग (इलैक्ट्रानिकी)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 अक्तूबर, 1978)

अक्तूबर, 1967 में लाहौल और स्पीति में कुदकिला ग्लेशियर के इलाके में 15,000 से 18,000 फुट की ऊंचाई में उड़ता हुआ एक विमान लापता हो गया था। अक्तूबर, 1978 में स्कवाड्रन लीडर पूरण चन्द्र सिंह रौतेला, वी० एस० एम० ने उस विमान के मलबे और पायलट के शव का पता लगाने का काम अपने हाथ में लिया और मौसम खराब होने के बावजूद ये अपने अभियान पर निकल पड़े, क्योंकि बाद में बरफ अधिक पड़ जाने से विमान के मलबे का पता लग सकना संभव नहीं था। रास्ते में लगभग 13,000 फुट की ऊंचाई पर उन्होंने अपने पास पहले ही सीमित मात्रा में आक्सीजन होने के बावजूद भी एक जापानी यात्री को आक्सीजन देकर उसकी जान बचाई। इनके साथ सामान ढोने वालों में से अधिकांश ने इनका साथ छोड़ दिया, लेकिन फिर भी दृढ़ निश्चय के साथ ये अपने दल के शेष सदस्यों का नेतृत्व करते रहे। ग्लेशियर इलाका बहुत खतरनाक था, तापमान ---30° सेंटीग्रेट था और ऊपर से 50 "नाट" की गति से हवा चल रही थी। रास्ते में एक बार तो ये गरदन तक बरफ में दब गए थे। इन सब कठिनाइयों के बावजूद ये अपने साथियों का हौसला बढ़ाते रहे और अन्त में इन्होंने विमान के मलबे का पता लगा ही लिया जो 11 वर्ष पूर्व लापता हुआ था। विमान के मलबे को ये लोग बेस तक वापस ले आए।

इस कार्रवाई में स्कवाड्रन लीडर पूरण चन्द्र सिंह रौतेला ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. स्क्वाड्रन लीडर जगत नारायण शुक्ल (8548), ए० डी० एम०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 अक्तूबर, 1978)

25 अक्तूबर, 1978 को अपराह्न में एयर फोर्स स्टेशन आगरा की नई परियोजना इलाके में बन रही सीवर लाइन के एक 30 फुट गहरे कुएं में एक मजदूर श्री मीठू लाल बह गया था। उसे बाहर निकाल लाने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ, क्योंकि कुएं में खुद फंस जाने का खतरा था। स्क्वाड्रन लीडर जगत नारायण शुक्ल को लगभग 2.30 बजे अपराह्न जब यह खबर मिली तो वे दौड़े हुए घटनास्थल पर पहुंचे और पुलिस तथा फायर ब्रिगेड को खबर की जो तत्काल वहां पहुंच गए। लेकिन वहां लगभग 20 फुट गहरी गुफा थी और मजदूर कहां पर दब गया है इसका ठीक-ठाक पता नहीं था इसलिए उस कुएं में जाने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ।

स्क्वाड्रन लीडर शुक्ल ने सारी स्थिति का जायजा लिया और खुद कुएं में कूद गए और मजदूर को बाहर निकाल लाने के लिए कोशिश करने लगे। इससे प्रेरित होकर दूसरे मजदूर भी बचाव कार्य में हाथ बंटाने के लिए वहां पहुंच गए और चार घंटे तक कोशिश करते रहने के बाद श्री मीठू लाल को बचा लिया गया।

इस कार्रवाई में स्क्वाड्रन लीडर जगत नारायण शुक्ल ने उच्च कोटि की पहलशक्ति, साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

10. 2570042 सिपाही ओम्मन, (मरणोपरान्त)
मद्रास।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 नवम्बर, 1978)

नवम्बर 1978 में लगातार भारी वर्षा के कारण इडप्पाञ्जंजी नदी (त्रिवेन्द्रम के पास) में अभूतपूर्व बाढ़ आ गई थी। नदी की चपेट में आने वाले इलाकों के लोग 8 से 10 फुट गहरे पानी से घिर गए थे। 4 नवम्बर, 1978 को बचाव-कार्य के लिए भेजी गई प्लाटून में सिपाही ओम्मन भी थे और उन्होंने बाढ़ से घिरे इलाकों से 20 औरतों और बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। बचाव-कार्य चल ही रहा था कि प्लाटून कमांडर को सूचना मिली कि नदी के उस पार एक मकान बाढ़ में बह गया है और उसमें रहने वाले लोग पेड़ों का सहारा लिए मौत से जूझ रहे हैं। नदी में पानी का बहाव व स्तर तेजी से बढ़ रहा था। ऐसी स्थिति में अपनी जान की परवाह किए बिना सिपाही ओम्मन नदी में कूद गए और उन लोगों को बचाने के लिए

नदी पार करने का प्रयास करने लगे। लेकिन उनके कमर से बंधी रस्सी टूट गई और वे नदी की तेज धारा में बह गए और डूब गए।

इस कार्रवाई में सिपाही ओम्मन ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. जी० ओ०—एन० वाई० ए० (ए ई), सहायक इंजीनियर (सिविल), हरभजन सिंह जनरल रिजर्व इन्जीनियर फोर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 नवम्बर, 1978)

लद्दाख इलाके में 5 से 19 नवम्बर, 1978 के दौरान भारी हिमपात के कारण श्रीनगर–लेह मार्ग पर गाड़ियों का आना जाना बन्द हो गया और 200 से अधिक सैनिक और सिविल वाहन जिनमें विदेशी पर्यटकों समेत बड़ी संख्या में यात्री लद्दाख से लौट रहे थे, ड्रास और मुमरी के बीच रुक गए। इन वाहने में कड़ाके की सर्दी में बगैर भोजन और आश्रय के यात्री ठिठुर रहे थे।

सहायक इन्जीनियर (सिविल) श्री हरभजन सिंह जो इस सैक्टर के प्रभारी अफसर थे, ने अपने सभी उपलब्ध साधनों को संगठित किया और उन्हें बर्फ हटाने के काम में लगा दिया। खराब मौसम, अत्यधिक ऊंचाई और दुर्गम इलाके के बावजूद बड़ी कुशलता से वे कार्य-संचालन करते रहे और यातायात के लिए मार्ग को फिर से चालू करने में सफल हुए। उन्होंने दिन-रात काम करके दो सप्ताह के भीतर ही कार्य पूरा कर दिया अन्यथा उसे पूरा करने में चार सप्ताह लग जाते। उनकी व्यावसायिक योग्यता एवं व्यक्तिगत देख-रेख के कारण ही यह कार्य शीघ्र पूरा हो सका और जिससे बहुमूल्य जानें और सम्पति नष्ट होने से बच गई।

इस कार्रवाई में श्री हरभजन सिंह ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. जी/31247 ओ ई एम कुन्दन सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 नवम्बर, 1978)

भारी हिमपात के कारण 5 और 6 नवम्बर, 1978 को श्रीनगर–लेह रोड़ पर यातायात ठप्प हो गया और लद्दाख से वापस आ रही 200 से अधिक सैनिक तथा असैनिक गाड़ियां ड्रास में रुक गई। इन गाड़ियों में काफी बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों सहित सैकड़ों यात्री लद्दाख से लौट रहे थे। यात्री बिना भोजन और आश्रय के जाड़े में ठिठुर रहे थे। अपनी जान की परवाह किए बिना 351 रोड मेंटेनेंस प्लाटून के एक्स्क्वेटिंग मशीनरी के आपरेटर श्री कुन्दन सिंह आगे आए और अपने डोजर से बर्फ साफ करने लगे। मौसम इतना ज्यादा खराब था कि हर समय बर्फानी तूफान की आशंका बनी हुई थी। ऐसी स्थिति में इतनी ऊंचाई पर काम करना अदम्य साहस का परिचायक है। इन्होंने रात-दिन काम कर दो सप्ताह की अल्प अवधि में सड़क साफ कर उसे यातायात योग्य बना दिया। इस प्रकार प्रशंसनीय काम कर इन्होंने असहाय स्थिति में पड़े हुए यात्रियों के अमूल्य जीवन और सरकारी सम्पत्ति की रक्षा की।

एक्स्क्वेटिंग मशीनरी आपरेटर श्री कुन्दन सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. जी/105286 पायनियर टीका राम
जनरल रिजर्व इन्जीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 नवम्बर, 1978)

लद्दाख इलाके में 6 और 19 नवम्बर, 1978 के बीच भारी हिमपात होने से श्रीनगर-लेह सड़क पर यातायात पूरी तरह ठप्प हो गया था। उस समय सेना एवं सिविल के 200 से भी अधिक वाहन लद्दाख से लौट रहे थे जिनमें विदेशी पर्यटकों सहित बहुत से यात्री थे। सड़क बन्द हो जाने के कारण ये सभी यात्री बिना भोजन-पानी और ठौर-ठिकाने के इस बर्फानी इलाके में घिर गए थे।

3,200 मीटर से भी अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में कड़ी सर्दी के कारण उपस्करों/संयंत्रों की काम करने की क्षमता बहुत घट जाने से बर्फ हटाने का काम बड़ा मुश्किल और खतरनाक हो जाता है। इन वाहनों और यात्रियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए पायनियर टीका राम को बर्फ काट कर सड़क साफ करने का काम सौंपा गया। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना इन्होंने इस काम का जिम्मा लिया और बहुत खराब मौसम में इस दुर्गम स्थान पर अपना "डोजर" चालू कर दिया। काम करते-करते पहाड़ी से अचानक एक हिमखण्ड फिसलकर इनके ऊपर आ गिरा जिसमें ये दब गए और इन्हें चोटें भी आई। इन्हें बचाकर बाहर लाया गया। लेकिन कुछ ही समय बाद ये बड़ी निर्भीकता से फिर अपने काम में जुट गए और तब तक बर्फ साफ करने में लगे रहे जब तक इन्हें चिकित्सा सहायता देने के लिए वहां से हटाया नहीं गया।

इस कार्रवाई में पायनियर टीका राम ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

14. स्क्वाड्रन लीडर डेविड जोसफ एचाटैस डैफिगुईरेडो (9844),
फ्लाइंग पायलट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 24 जनवरी, 1979)

24 जनवरी, 1979 को स्क्वाड्रन लीडर डेविड जोसफ एचाटैस डैफिगुईरेडो गणतंत्र दिवस फ्लाई पास्ट के पूर्वाभ्यास में भाग ले रहे 7 विमानों में से एक में उड़ान भर रहे थे। पूर्वाभ्यास उड़ान पूरी होने पर नीचे उतरने के लिए इन्होंने जैसे ही अपने विमान को बाई ओर मोड़ा उसके कन्ट्रोल सरकिट की हाइड्रालिक प्रणाली में गड़बड़ी हो गई और विमान की बाई ओर लुढ़कने की गति अचानक ही बढ़ गई। उन्होंने देखा कि विमान को "कन्ट्रोल स्टिक" जकड़ गई है और उसे

केन्द्र में लाना कठिन हो गया है। विमान जैसे-जैसे बाईं ओर झुकने लगा, उसका अगला हिस्सा तेजी से नीचे की ओर होता चला गया। ऐसी हालत में जबकि विमान काबू से बाहर हो गया था, अधिकांश पायलट यही उचित समझते कि काफी ऊंचाई पर होने के बावजूद विमान छोड़ दिया जाए। लेकिन इन्होंने अपनी सूझ-बूझ नहीं खोई और एक मूल्यवान विमान को बचाने के विभिन्न उपाय करने लगे। अन्त में जब विमान केवल 600 फुट की ऊंचाई पर था तो ये उसे ऊपर ले जाने में सफल हो गए और फिर सुरक्षित अड्डे पर उतार लाए।

इस कार्रवाई में स्क्वाड्रन लीडर डेविड जोसफ एचाटैस डेफिगुईरैडो ने साहस, दृढ़ता, व्यावसायिक दक्षता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. जी०/129360 पायनियर जगत सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 14 फरवरी, 1979)

जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स के कृनिक दल में एक्स-कवेटिंग मशीन आपरेटरों की कमी होने पर, पायनियर श्री जगत सिंह को डोजर चलाने के काम पर लगाया गया। इन्हें तिपाईमुख बांध को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली सड़क पर आगे काम करने के लिए कहा गया। इसके लिए यह जरूरी था कि तिपाईमुख बांध की दूसरी ओर से भी खुदाई का काम आरम्भ किया जाए। सड़क पर सीधी पथरीली ढाल थी, अत: बांध की दूसरी ओर पहुंचना संभव नहीं था। इसका एकमात्र उपाय था डोजर को किसी प्रकार तुवई नदी की दूसरी ओर ले जाना। नदी में बाढ़ आई हुई थी और कोई भी व्यक्ति डोजर लेकर नदी पार करने को तैयार नहीं था। पायनियर जगत सिंह इस काम को करने के लिए आगे आए और भंयकर खतरे की परवाह न करते हुए डोजर लेकर नदी को पार कर लिया। इन्होंने चट्टान को काटना आरम्भ किया ही था कि अचानक चट्टान का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऊपर से गिर गया और ये डोजर सहित मलबे के नीचे दब गए। इससे इन पर कई गंभीर चोटें आईं। अपने जख्मों की परवाह न करते हुए इन्होंने चट्टानों के गिरते रहने के बावजूद भी डोजर को बाहर निकाल लिया और इस प्रकार कीमती मशीन को नष्ट होने से बचा लिया।

इस कार्रवाई मे पायनियर जगत सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. जी०/31039 ओ० ई० एम० हरक सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 फरवरी, 1979)

हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर में 19 व 20 फरवरी, 1979 की रात को मूसलाधार वर्षा और भारी हिमपात के साथ-साथ भंयकर तूफान आया। इसके कारण काफी हिम-स्खलन् हुआ और चटटानें गिरी। इससे हिन्दुस्तान-तिब्बत सड़क को कई स्थानों पर काफी नुकसान पहुचा। इसके कारण सैनिकों और जरूरी सामान को लाने-लेजाने का काम बिल्कुल रुक गया।

रोड़ मेंटेनेन्स प्लाटून के ओ० ई० एम० हरक सिंह को डोजर लेकर सड़क पर चार जगहों में पड़ी बर्फ को साफ करने का काम सौंपा गया था। जमाव-बिन्दु से नीचे के ताप-मान मे ये अपने जीवन को जोखिम में डालकर तथा आराम को त्याग कर दिन-रात लगातार काम करते रहे। ऊपर से निरन्तर मिटटी-पत्थर आदि के गिरने और टूट-फूट होने के बावजूद ये घबराये नहीं और एक-एक करके चारों स्थानों पर से इन्होंने बर्फ साफ कर दी और थोड़े ही समय में सड़क यातायात के लिए खुल गई।

इस कार्रवाई में ओ० ई० एम० हरक सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ता और असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

17. जी०/106818 अधीक्षक बी०/आर० यू० पी० आई०
कुमारन बालकृष्णन जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 मार्च, 1979)

हिमाचल प्रदेश की लाहौल तथा स्पीति घाटियों में 28 फरवरी से 7 मार्च, 1979 तक भारी हिमपात हुआ और भारी मात्रा में बर्फ फिसलने और चट्टानें गिरने की घटनाएं हुईं। इसके परिणामस्वरूप उस क्षेत्र के कई मकान दब कर नष्ट हो गए और उनमें कुछ लोग दब कर मर गए और कुछ गंभीर रूप से घायल हो गए। 10 से 20 फुट बर्फ के कारण रोहतांग दर्रे से आगे की सड़क में यातायात ठप्प हो गया और साथ ही पाक्षिक हैलीकाप्टर सेवा भी भंग हो गई।

सिविल प्रशासन द्वारा उन इलाकों में बचाव व सहायता कार्य तत्काल शुरू करने के लिए इस्तिगिरी हैलीपैड के 35,000 वर्ग फुट इलाके में और इस्तिगिरी से बीलिंग तक की 6 किलोमीटर की दूरी तक सड़क से तत्काल बर्फ हटाना जरूरी था जिससे सड़क यातायात और हैलीकाप्टर सेवा फिर से चालू हो सके। इसके अलावा मकानों के आस-पास जमी बर्फ भी बचाव कार्य के लिए साफ करनी जरूरी थी।

उस इलाके में जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स की 397 रोड मेंन्टेनेन्स प्लाटून की एक टुकड़ी थी जिसके प्रभारी अधीक्षक बालकृष्णन थे। इस टुकड़ी ने बर्फ साफ करने का काम शुरू किया। उस समय तापमान शून्य से भी कम था और बर्फानी तूफान जारी था। ऐसे मौसम में उन्हें कार्य निरीक्षण के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता था। एक दिन बर्फानी तूफान में ये रास्ते से भटक गए और एक खाई में जा गिरे तथा गले तक बर्फ में धंस गए। संयोगवश, पास में ही जी० आर० ई० एफ० का एक कर्मचारी काम कर रहा था जिसने समय पर सहायता कर इन्हें बचा लिया।

इस प्रकार अधीक्षक कुमारन बालकृष्णन ने साहस, दृढ़ता तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

18. जी०/148156 लीडिंग हैंड अर्जुन सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 मार्च, 1979)

हिमाचल प्रदेश की लाहौल और स्पीती घाटी में 28 फरवरी से 7 मार्च, 1979 के बीच भारी हिमापात हुआ तथा बर्फानी तूफान आया। अनेक मकान बर्फ के नीचे दब गए, बहुत से व्यक्ति मारे गए, और उस क्षेत्र में सारी संचार-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई।

1650 पायनियर कम्पनी (जी० आ० ई० एफ०) के लीडिंग हैण्ड अर्जन सिंह कीलांग के समीप ईस्टिंगरी में एक छोटी टुकड़ी के इंचार्ज थे। इन्हें विभागीय भवनों की छतों से बर्फ साफ करने का काम सौंपा गया था। जिसे इन्होंने अपने साथियों की मदद से पूरा किया। इस प्रकार सरकारी सम्पत्ति को भारी क्षति होने से बचाया। इन्होंने हैलीकाप्टरों के उतरने के लिए ईस्टिंगरी के हैलीपैड से 10 से 20 फुट गहरी बर्फ साफ करने के लिए एक दल भी गठित किया।

6 मार्च, 1979 को जब सारा गेरिजन बर्फ साफ करने के काम में लगा हुआ था, तो लीडिंग हैण्ड अर्जुन सिंह ने पास की खाई से सहायता के लिए आवाज सुनी। ये दौड़कर उस स्थान पर गए और देखा कि दल के प्रभारी अधिकारी गर्दन तक बर्फ में दबे हुए हैं। उस स्थान की स्थिति ऐसी थी कि अगर इनके जरा भी चूक हो जाती तो ये भी अपनी जान से हाथ धो बैठते। परन्तु अपने जीवन की परवाह न करते हुए इन्होंने प्रभारी अधिकारी के जीवन की रक्षा की।

इस प्रकार लीडिंग हैण्ड अर्जुन सिंह ने अदम्य साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

19. जी०/31159 (ओ० ई० एम०) मेहन्ती राम
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 मार्च, 1979)

दक्षिण मिजोरम में एक नई सड़क बनाते समय बीच में एक जगह को साफ कर उसे सड़क की सीध में लाने के लिए एक्स्क्वेटिंग मशीनरी आपरेटर श्री मेहन्ती राम को 9 मार्च, 1979 को उनके डोजर के साथ भेजा गया। उन्होंने डोजर की मदद से सड़क पर से धीरे-धीरे मिट्टी आदि नीचे घाटी में फैंक कर उस जगह को काफी हद तक सड़क के बराबर कर दिया था। सुबह सात बजे जब वे डोजर की मदद से उस जगह से मिट्टी का ढेर घाटी की ओर फैंक रहे थे, तो डोजर की मिट्टी धंसने लगी और डोजर घाटी की ओर लुढ़कने लगा। डोजर से कूद कर अपने प्राण रक्षा करने के बजाए आपरेटर मेहन्ती राम ने डोजर को बचाने की भरसक कोशिश की। लेकिन इस बीच अचानक झटका लगने से वे डोजर के आगे गिर पड़े और उसके नीचे दबकर उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्रवाई में एक्सक्वेटिंग मशीनरी आपरेटर श्री मेहन्ती राम ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. स्क्वाड्रन लीडर गुलजारीन्दर सिंह बढ़ैच (8762)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 14 मार्च, 1979)

मार्च, 1979 में हिमाचल प्रदेश में लाहौल और स्पीति घाटी में भारी हिमपात हुआ और हिमखण्डों के खिसकने के कारण समस्त घाटी में सारा यातायात ठप्प हो गया था। इससे वहां के निवासियों के जान-माल की काफी हानि हुई। स्क्वाड्रन लीडर गुलजारीन्दर सिंह बढ़ैच की उस क्षेत्र में राहत कार्य के लिए सामान की सप्लाई करने का काम सौंपा गया था। खराब मौसम के कारण वायुयान के उड़ान में आने वाली कठिनाइयों की परवाह किए बिना इन्होंने आठ उड़ाने भरी जिनमें प्रभावित क्षेत्र के लोगों के लिए 6,700 किलोग्राम सामान की सप्लाई की जा सकी।

स्क्वाड्रन लीडर गुलजारीन्दर सिंह बढ़ैच ने साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

21. स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह (8675)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 26 मार्च, 1979)

26 मार्च, 1979 को स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह लद्दाख में विमान से खाद्य सामग्री पहुंचाने का काम कर रहे थे। जिस स्थान पर यह सामग्री गिराई जानी थी वह नदी की एक संकरी घाटी में स्थित था जिसके चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां थी। अतः पहाड़ियों के नुकीले मोड़ों पर बार-बार विमान में अत्यधिक सूझ-बूझ और कुशलता से काम लेना जरूरी था। लगभग 13,000 फुट ऊंचाई पर एक खतरनाक मोड़ पर मुड़ते समय इनके विमान का एक इंजन अचानक खराब हो गया जिससे विमान की ऊंचाई और उड़ान-शक्ति तेजी से घटने लगी। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह ने बड़ी कुशलता के साथ अपने विमान को एक अग्रिम हवाई अड्डे की ओर मोड़ दिया जो सामान गिराने के स्थान से लगभग 45 किलो मीटर की दूरी पर था और फिर एक ही इंजन की सहायता से उसे सुरक्षित भूमि पर उतार दिया। उड़ान की इस विकट घड़ी में बड़ी सूझ-बूझ और दृढ़ आत्म-विश्वास का परिचय देकर स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह ने न केवल एक बहुमूल्य विमान नष्ट होने से बचाया, बल्कि निर्धारित स्थान तक खाद्य-सामग्री भी पहुंचा दी जिसकी तत्काल जरूरत थी।

इस कार्रवाई में स्क्वाड्रन लीडर नरिन्दर सिंह ने व्यावसायिक कौशल, साहस, दृढ़-निश्चय एंव उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

22. कैप्टन सुबीर कुमार मुखर्जी (आई० सी०-30461)
आर्टीलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 अप्रैल, 1979)

11 अप्रैल, 1979 की औद्योगिक बस्ती जमशेदपुर में सर्वत्र हिंसा, दंगे-फसाद और लूट-पाट की घटनाएं हो रही थी। स्थिति पर काबू पाने के लिए सिविल प्रशासन ने सेना की सहायता मांगी। हिंसा और लूट-पाट की इन वारदातों को रोकने और सामान्य स्थिति कायम करने के लिए आर्टी-लरी रेजीमेंट की दो टुकड़ियां भेजी गई जिनमें एक की कमान कैप्टन सुबीर कुमार मुखर्जी कर रहे थे।

दूसरे दिन हिंसा पर उतारू भीड़ ने कुछ मकानों को घेर लिया और वह उन पर आग लगाने ही वाली थी कि इतने में कैप्टन मुखर्जी दौड़कर वहां पहुंचे और अपने सैनिकों को जगह-जगह तैनात कर चार जवानों को लेकर पास की एक छोटी गली से होते हुए हिंसक भीड़ को रोकने का प्रयास किया। जैसे ही भीड़ ने कैप्टन मुखर्जी को चार जवानों के साथ आते देखा, उसने देशी रिवाल्वरों और भालों से उन पर हमला बोल दिया। रिवाल्वरों से उड़े धुएं और मकानों की ओट का सहारा लेते हुए कैप्टन मुखर्जी ने पांच राउंड गोली चलाने का आदेश दिया जिससे हथियारों से लैस चार गुंडे जख्मी हो गए। शेष दंगाई भागने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें पकड़ लिया गया और उनसे भाले और तलवारें छीन ली गई। उनके अन्य साथियों को भी दोनों ओर से घेर लिया गया तथा तितर-बितर कर दिया गया।

इस बीच शहर के दूसरे इलाके में भारी लूट-पाट और दंगे-फसाद होने के समाचार मिले। हिंसक भीड़ एक समुदाय के लोगों पर, जो एक छोटे से मकान में शरण लिए हुए थे, हमला करने पर उतारू थी। कैप्टन मुखर्जी ने इस भीड़ को तितर-बितर किया और उन लोगों की तब तक हिफाजत की जब तक उन्हें सुरक्षित स्थानों पर नहीं पहुंचाया गया। इन्होंने स्थिति से निपटने में बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और केवल छः राउंड गोली चलाकर हथियारों से लैस 500 से भी अधिक लोगों की हिंसक भीड़ पर काबू पाने में सफल रहे। अपनी जान की परवाह किए बिना इस भीड़ को तितर-बितर होने पर मजबूर कर दिया और तत्काल उस मकान के चारों ओर जवान तैनात कर दिए। इसके बाद सेना की दूसरी टुकड़ी वहां पहुंच गई और फिर इन्होंने बड़े व्यवस्थित ढंग से दंगाईयों से वह इलाका खाली कराया।

इस कार्रवाई में कैप्टन सुबीर कुमार मुखर्जी ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

23. स्क्वाड्रन लीडर मनोहर पांडुरंग राने (9763)
फ्लाइट (पायलट) (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 मई, 1979)

1 मई, 1979 की चीफ आफ स्टाफ को हैलीकाप्टर द्वारा हलवाड़ा से बरनाला ले जाने और वहां से वापिस लाने के लिए स्क्वाड्रन लीडर मनोहर पांडुरंग राने को तैनात किया गया था। कार्य समाप्त होने पर जब वह हैलीकाप्टर को बेस पर ला रहे थे तो रोटर ब्लेड स्पेसिंग केवल टूट गया और रोटर हैड के तीन कण्ट्रोल रौडों में से दो अलग हो गई। इससे ऊंचाई पर या नीचे उतरते समय उनका हैलीकाप्टर पर कोई विशेष नियंत्रण नहीं रहा। फिर भी वे हैलीकाप्टर को धीरे-धीरे एकदम सीधे नीचे उतारने की कोशिश करने लगे। जब उन्होंने देखा कि हैलीकाप्टर की नीचे उतरने की गति कम नहीं की जा सकती तो इन्होंने इंजिन बन्द कर दिया क्योंकि इसके सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं था। दुर्भाग्यवश हैलीकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ और उसमें आग लग गई जिससे स्क्वाड्रन लीडर राने को अपनी जान गंवानी पड़ी।

स्क्वाड्रन लीडर मनोहर पांडुरंग राने ने साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

24. फ्लाइंग अफसर अतुल त्रिवेदी (13805)
फ्लाईंग (पायलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 मई, 1979)

8 मई, 1979 को प्रशिक्षण उड़ान पर जाने वाले फ्लाईंग अफसर अतुल त्रिवेदी को "मारुत" लड़ाकू विमान उड़ाने का काम सौंपा गया। उड़ान भरने के लगभग दस मिनट बाद विमान के पिछले भाग में कम्पन होने लगी और अगला भाग भी दोलायमान होने लगा। इन्होंने बड़ी सूझबूझ से काम लिया और जल्दी ही यह मालूम कर लिया कि विमान के मुख्य और आपत्ति काल में काम आने वाले ट्रिमर कार्य नहीं कर रहे हैं। इन्होंने यह भी देखा कि रेडियो टेलिफोनिक संचार व्यवस्था भी बिगड़ गई है जिससे नीचे फ्लाईंग कंट्रोल से किसी प्रकार की सहायता पाना संभव नहीं है।

इस विकट परिस्थिति में भी फ्लाईंग अफसर त्रिवेदी ने बड़ी व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया। बिना रेडियो टेलिफोन संचार व्यवस्था के 200 नाट की गति से नीचे उतरे और विमान को किसी प्रकार की क्षति पहुंचे बिना जमीन पर ला खड़ा किया। फ्लाईंग अफसर त्रिवेदी ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर न केवल बहुमूल्य विमान को ही बचाया बल्कि गड़बड़ी के बाद महत्वपूर्ण जांच के लिए भी उपलब्ध किया।

इस कार्रवाई में फ्लाईंग अफसर अतुल त्रिवेदी ने अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक कुशलता, दृढ़-संकल्प और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

25. लैफ्टिनेंट कर्नल सुरेन्द्र सिंह बाजवा (आई० सी०-13014) पंजाब
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून, 1979)

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों ने बौकारों में शस्त्रागार पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था। इस पर सिविल प्राधिकारियों की सहायता के लिए सेना को बुलाया गया ताकि वे इस दल के कार्मिकों को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर सके। बैरक और शस्त्रागार की रक्षा के

लिए हर तरह से नाकाबन्दी की हुई थी। चारों ओर कटीले तार लगे हुए थे, खाइयां खुदी हुई थी और शस्त्रागार के इर्द-गिर्द सभी बैरकों की छतों तथा पहली मंजिल की खिड़कियों पर रेत के बोरों से बकर बनाए हुए थे।

24-25 जून, 1979 की रात को एक इन्फैन्टरी बटालियन को आदेश दिया गया कि वे केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों के बैरकों को घेर ले। उक्त शस्त्रागार को कब्जे में लेने का काम जिस कंपनी को सौंपा गया था उसकी कमान मेजर सुखदेव सिंह कर रहे थे। इस कार्रवाई में मेजर सुखदेव सिंह गोली लगने से बुरी तरह से घायल हो गए। उसके बाद उस कम्पनी की कमान लैफ्टिनेंट कर्नल सुरीन्द्र सिंह बाजवा ने संभाली और दृढ़ संकल्प के साथ कम्पनी का नेतृत्व किया तथा सैन्य दल की कम से कम क्षति के साथ शस्त्रागार को कब्जे में लेने में सफल हुए।

इस कार्रवाई में लैफ्टिनेंट कर्नल सुरीन्द्र सिंह बाजवा ने असाधारण साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

26. कैप्टन राजकुमार चान्द (आई० सी-34189), पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून, 1979)

बोकारों में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के करीब 1500 जवानों ने सरकारी आदेशों का उलम्घन करते हुए वहां के शस्त्रागार पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। इस पर सिविल अधिकारियों की सहायता के लिए 23 जून, 1979 को सेना को बुलाया गया ताकि वे इस दल के कार्मिकों को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य कर सके। बैरक और शस्त्रागार की रक्षा के लिए हर तरह से नाकेबन्दी की हुई थी। चारों ओर कटीले तार लगे हुए थे, खाइयां खुदी हुई थी और बैरकों की छतों और पहली मंजिल की खिड़कियों पर रेत के बोरों से बंकर बनाए हुए थे।

24-25 जून, 1979 की रात को एक इन्फैन्टरी बटालियन को बैरक घेरने के लिए भेजा गया। जिससे केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिक आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य हो सके। केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों को बैरकों से बाहर निकालने का काम जिस प्लाटून को सौंपा गया था उसकी कमान कैप्टन राज कुमार चान्द कर रहे थे। इस कार्रवाई में कैप्टन राजकुमार चान्द की उनसे हाथापाई हो गई और उनके टांग में गोली लगने से जख्मी हो गये थे। किन्तु वे अपने दल का नेतृत्व करते रहे और वहां से तभी हटे जब उनको सौंपा गया काम पूरा हो गया।

इस कार्रवाई में कैप्टन राज कुमार चान्द ने साहस, नेतृत्व और दृढ़ता तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

27. कैप्टन कंवर सर्वजीत सिंह पंवार (एम० आर०-3223) सेना चिकित्सा कौर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून, 1979)

बोकारों में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों ने सरकारी आदेश का उलंघन करते हुए बोकारों के शस्त्रागार पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था। इस पर सिविल अधिकारियों की सहायता के लिए 23 जून, 1979 को सेना को बुलाया गया ताकि वे इस दल के कार्मिकों को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर सकें। बैरक और शस्त्रागार की रक्षा के लिए हर तरह से नाकाबन्दी की गई थी। चारों ओर कटीले तार लगाए हुए थे, खाइयां खुदी हुई थीं और बैरकों की छतें तथा पहली मंजिल की खिड़कियों पर रेत के बोरों से बंकर बनाए हुए थे।

24-25 जून, 1979 की रात को एक इन्फन्ट्री बटालियन को केन्द्रीय सुरक्षा दल के कार्मिकों को घेरने के लिये कहा गया। मेजर सुखदेव सिंह जो इस कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे, गोली लगने से वे बुरी तरह जख्मी हो गये। सेना चिकित्सा कौर के कप्टन कंवर सर्वजीत सिंह पंवार घायल अफसर को प्राथमिक चिकित्सा सहायता देने के लिये उस समय सेना की सबसे आगे की पंक्ति में आये जबकि राइफलों से गोलियां चल रही थी, किन्तु घायल अफसर को बचाया न जा सका। इसके बाद जान का भारी खतरा होने के बावजूद भी वे सेना की अग्रिम पंक्ति में ही डटे रहे और हताहतों को प्राथमिक चिकित्सा सहायता देते रहे क्योंकि भारी गोली-बारी के बीच हताहतों को वहां से निकालना बहुत कठिन था। ऐसा करते हुए कैप्टन पंवार को भी गोली लगी और वे गम्भीर रूप से घायल हो गये। इन्हें वहां से बोकारो अस्पताल ले जाया गया और वे वहां बाद में स्वस्थ हो गये।

इस कार्रवाई में कैप्टन कंवर सर्वजीत सिंह पंवार ने अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

28. 2468081 सिपाही मंजीत सिंह (मरणोपरान्त) पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून, 1979)

23 जून, 1979 को बोकारों में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों ने वहां के शस्त्रागार पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था इस पर सिविल अधिकारियों की सहायता के लिये सेना को बुलाया गया ताकि वे इस दल के कार्मिकों को आत्मसमर्पण करने के लिये बाध्य कर सकें। बैरक और शस्त्रागार की रक्षा के लिये हर तरह की नाकेबन्दी की हुई थी। चारों ओर कटीले तार लगे हुए थे, खाईयां खुदी हुई थी और बैरकों की छतों और पहली मंजिल की खिड़कियों पर रेत के बोरों से बंकर बनायें हुए थे।

24-25 जून, 1979 की रात को एक इन्फैन्टरी बटालियन को आदेश दिया गया कि वे केन्द्रीय सुरक्षा दल के कार्मिकों की बैरकों को घेर ले। बैरकों को शीघ्र ही घेर लिया गया। शस्त्रागार के साथ के बैरकों से सेना कार्मिकों पर ठीक निशाने से राइफलों से गोलियां बरसाई जा रही थी जिसके परिणामस्वरूप शस्त्रागार पर उत्तर की ओर से जाने का रास्ता बिल्कुल बन्द हो गया था। सिपाही मनजीत

सिंह को उसके सैक्शन कमांडर ने आदेश दिया कि वे अपने सैक्शन के साथ आगे बढ़े और वहां रिहायशी बैरकों की ओर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों पर धावा बोले। अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना वह उस इमारत में घुसे और केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों द्वारा अचानक चलाई गई गोलियों की बौछार की लपेट में आ गये और घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई। किन्तु उनकी बहादुरी से प्रेरित होकर उनके सेक्शन के कार्मिकों ने केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों पर भारी गोला बारी की और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिये बाध्य कर दिया।

इस कार्रवाई में सिपाही मनजीत सिंह ने असाधारण कोटि का अनुकरणीय साहस, वृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

29. 2470426 सिपाही जसविन्दर सिंह
पंजाब। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 25 जून, 1979)

23 जून, 1679 को बोकारो में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों ने सरकारी आदेशों का उल्लंघन करते हुए वहां के शस्त्रागार पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था। इस पर सिविल अधिकारियों की सहायता के लिये सेना को बुलाया गया जिससे वे इस दल के कार्मिकों को आत्म-समर्पण करने के लिये बाध्य कर सकें। बैरक और शस्त्रागार की रक्षा के लिये हर तरह की नाकेबन्दी की हुई थी। चारों ओर कंटीले तार लगे हुए थे, खाइयां खुदी हुई थी और बैरकों की छतों और पहली मंजिल की खिड़कियों पर रेत के बोरों से बंकर बनाये हुए थे।

24-25 जून, 1979 की रात को एक इन्फैन्ट्री बटालियन को आदेश दिया गया कि वे औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों के बैरकों को घेर लें। बैरकों को शीघ्र घेर लिया गया। कम्पनी जब शस्त्रागार और कार्यालय भवन पर धावा बोल रही थी तो उनकी छतों पर मोर्चाबन्दी किये हुए केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों द्वारा ठीक निशाने से राइफल से गोलियां बरसाई जा रही थी। सभा हाल के पीछे के बैरकों को घेरने वाली कम्पनी से कहा गया कि वे आगे बढ़े और हमला करके उस बैरक के कार्मिकों को आत्मसमर्पण करने को बाध्य करे। सिपाही जसविन्दर सिंह, जो उस भवन के भीतर लड़ रहे थे, अपने सेक्शन में सबसे आगे थे। केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के कार्मिकों को उस भवन से बाहर निकालते समय सिपाही जसविन्दर सिंह बंकर से आई हुए एक गोली से गम्भीर रूप से घायल हो गये। उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया जहां 28 जून, 1979 को जख्मों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्रवाई में सिपाही जसविन्दर सिंह ने उच्चकोटि का अनुकरणीय साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

वी० के० दर,
राष्ट्रपति के सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 8 मई 1980

सं० 38-प्रेज/80—राष्ट्रपति, दीर्घ काल तक की गई सेवाओं के अभिज्ञानार्थ सशस्त्र सेवाओं के लिए एक मैडल का स्मारम्भ करते हैं और इस निमित्त निम्नलिखित अध्यादेश बनाते तथा व्यवस्थापित एवं स्थापित करते हैं जो इस अधि-सूचना के जारी होने की तिथि से लागू माना जायेगा।

प्रथम:—यह मडल "त्रिंशत वर्ष दीर्घ सेवा मंडल" "30 Years Long Service Medal" कहलाएगा।

द्वितीय:—मैडल ताम्र निकल से बना गोल आकृति में 35 मिलीमीटर व्यास का होगा और सामान्य रूप से प्रयोग में आने वाली एक सादी समतल पट्टी के साथ जुड़ा होगा। इसमें सामने की ओर राज्य चिन्ह समूदभूत होगा जिसके नीचे रिम के साथ "त्रिंशत वर्ष" "30 Years और "दीर्घ सेवा "Long Service" राज्य चिह्न के दोनों ओर रिम के साथ-साथ अन्तर्लिखित होगा इसके पीछे बीच में तीनों सेनाओं के चिन्ह अंकित होंगे जिसके ऊपर उदय होता हुआ सूर्य होगा। मैडल का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

तृतीय—मैडल 32 मिलीमीटर चौड़े रेशमी रिबन से वक्षस्थल पर बायीं ओर लटकाया जायेगा। रिबन नारंगी रंग का होगा जिसके बीच बीच 2 मिलीमीटर चौड़ी लाल, गहरे नीले और हल्के नीले रंग की तीन खड़ी धारियां होंगी तथा शेष रिबन के दो बराबर भाग दोनों ओर होंगे।

चतुर्थ—थल सेना, नौसेना और वायुसेना में सेवारत उन कार्मिकों को प्रदान किया जायेगा जिन्होंने इस अधिसूचना के जारी होने की तिथि को या उसके बाद 30 वर्ष या उससे अधिक की निष्कलंक सेवा पूरी कर ली हो।

पंचम:—मैडल प्राप्तकर्ता द्वारा विशेष अवसरों पर धारण किये जाने वाले मैडल का लघुरूप, मैडल का आधा होगा तथा कथित लघुरूप का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

षष्ठ:—किसी व्यक्ति को प्रदान किये गये मैडल को रद्द एवं निराकरण करने तथा बाद में इसे वापस देने के लिये राष्ट्रपति सक्षम होंगे।

सप्तम:—सरकार ऐसे अनुदेश जारी करने के लिये सक्षम होगी जो इन अध्यादेशों के प्रयोजनों की पूर्ति के लिये आवश्यक होंगे।

सु० नीलकण्ठन
राष्ट्रपति के उप सचिव

प्रधान मंत्री कार्यालय

नई दिल्ली-110011, दिनांक 1 मई 1980

सं. 21/1630/79-पी.एम.ए.—श्री वी. पी. भाटिया, भूतपूर्व प्रधान मंत्री के स्थानापन्न अतिरिक्त निजी सचिव, जिन्हें इस कार्यालय की समसंख्यक अधिसूचना दिनांक 28-1-80 के द्वारा 29 जनवरी, 1980 से 11 अप्रैल, 1980 तक 74 दिनों का अर्जित अवकाश स्वीकृत किया गया था, को 12 अप्रैल, 1980 से 26 मई, 1980 तक (दोनों दिन शामिल करते हुए) 45 दिनों का और अर्जित अवकाश स्वीकृत किया जाता है।

2. श्री वी. पी. भाटिया की सेवाएं, जो गृह मंत्रालय के सी. एस. एस. एस. कार्डर के ग्रेड 'बी' आशुलिपिक हैं, अवकाश समाप्त होने पर गृह मंत्रालय को सुपुर्द समझी जायेंगी।

आलोक प्रकाश, प्रधान मंत्री जी के निजी सचिव

योजना मंत्रालय

सांख्यिकी विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 5 अप्रैल 1980

संकल्प

सं. एच.-11021/22/79-समन्वय.—इस विभाग के दिनांक 28 मार्च, 1980 के समसंख्यक संकल्प के क्रम में श्री एस. एम. एल. भटनागर, सचिव, सांख्यिकी विभाग का नाम श्री एस. एस. पुरी, सचिव योजना एवं सांख्यिकी जो इस विभाग को दिनांक 16 नवम्बर, 1979 के समसंख्यक संकल्प के पैरा-2 में उल्लिखित है, के नाम के स्थान पर प्रति स्थापित किया जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र भाग-1 खण्ड-1 में प्रकाशित किया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, सभी राज्य सरकारों, संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों तथा सभी अन्य सम्बद्ध व्यक्तियों को भेजी जाए।

आर. एन. सक्सेना, उप सचिव

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

कम्पनी कार्य विभाग

नई दिल्ली-110004, दिनांक

आदेश

सं. 27(26)-80.सी.एल.2.—कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 209 क की उप-धारा (1) के खंड (2) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कम्पनी कार्य विभाग के उप-निदेशक निरीक्षण, श्री पी. जे. थामस कट्टूटी को कथित धारा 209 क के उद्देश्य के लिए प्राधिकृत करती है।

सं. 27(26)-80-सी.एल.2.—कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उप-धारा (1) के खंड (2) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कम्पनी कार्य विभाग के निरीक्षण अधिकारी श्री पी. के. बन्सल को कथित धारा 209क के उद्देश्य के लिए प्राधिकृत करती है।

2. केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा, श्री पी. के. बसी, सहायक निरीक्षण अधिकारी, बम्बई के पक्ष में पहले के प्रेषित दिनांक 12-8-1976 के आदेश संख्या 27(5)-76 सी. एल. 2 के प्राधिकरण को रद्द करती है।

सु. बालरामन, अवर सचिव

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 3 मई 1980

सं. 13019/5/79-जी.पी.-II.—इस मंत्रालय की तारीख 23 अप्रैल, 1980 की अधिसूचना 13019/5/79-जी.पी.-II में आंशिक संशोधन करते हुए राष्ट्रपति, श्री गोपी चन्द, एडवोकेट, 588/16 ए, चंडीगढ़ के लिए वर्ष 1980-81 के लिए चण्डीगढ़ के लिए गृह मंत्री की सलाहकार समिति को गैर-सरकारी सदस्य सहर्ष नियुक्त करते हैं।

एस. सी. शर्मा, उप सचिव

समाज कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 25 अप्रैल 1980

संकल्प

सं. 1-32/77-सी.एस.डब्ल्यू.बी. (खण्ड-2). — इस मंत्रालय के संकल्प संख्या-1-32/77-सी.एल.डब्ल्यू.बी. दिनांक 22 अप्रैल, 1978 के आंशिक आक्षेपक में भारत सरकार केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के साधारण निकाय में श्रीमती अंजनी दयानन्द के स्थान पर श्री अनिल बोर्डिया, संयुक्त सचिव, शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, शिक्षा विभाग को नामित करते हैं।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रतिलिपि निम्नलिखित को भेजी जाए:—

1. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के सब सदस्य।
2. सब राज्य सरकारें/संघ शासित प्रदेश प्रशासन।
3. भारत सरकार के सब मंत्रालय/विभाग।
4. राष्ट्रपति सचिवालय।
5. योजना आयोग।
6. प्रधान मंत्री कार्यालय।
7. लोकसभा/राज्य सभा सचिवालय।
8. मंत्रिमंडल सचिवालय।
9. पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली।
10. महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली।
11. कम्पनी कार्य विभाग, नई दिल्ली।
12. क्षेत्रीय निदेशक, कम्पनी विधि बोर्ड, कानपुर।
13. कम्पनियों के रजिस्ट्रार, नई दिल्ली।
14. सचिव, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली।
15. राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्डों के सब अध्यक्ष।
16. राज्य/संघ शासित प्रदेशों के राज्यपालों/प्रशासकों/उपराज्यपालों/मुख्यआयुक्तों के निजी सचिव।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को साधारण जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

बी. एन. बहादुर,
निदेशक (एस. डी.)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1980

No. 36-Pres./80.—The President is pleased to approve the award of KIRTI CHAKRA to the undermentioned officer for acts of conspicuous gallantry :—

Major SUKHDEV SINGH (IC 26235), *(Posthumous)*
PUNJAB

(Effective date of the award : 25th June, 1979).

On the night of 24th 25th June, 1979, an Infantry battalion was moved to cordon the barracks and to enforce the surrender of Central Industrial Security Force personnel, who had defied Government orders and had seized the armoury at Bokaro. The armoury had 400 rifles, 61 pistols, 24 private arms and 24000 rounds of ammunition. The barracks and the armoury were well fortified with wire obstacles, ditches and sand bag bunkers built on roof tops and in the windows at first floor of the barracks. Major Sukhdev Singh, who was commanding a Company of the battalion, ordered the CISF personnel to surrender but was greeted with a volley of fire from the armoury and other buildings. His repeated appeals drew only intensified rifle fire and the final appeal at 0430 hours was also rejected. Instead, Major Sukhdev Singh was challenged to attack and capture the armoury. At this stage, the Company returned the fire and action to seize the armoury was launched. At aobut 0520 hours when Major Sukhdev Singh rushed forward with his men he was hit by a bullet and was killed instantaneously.

In this action, Major Sukhdev Singh displayed conspicuous courage, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

No. 37-Pres/80.—The President is pleased to approve the award of SHAURYA CHAKRA to the undermentioned persons for acts of gallantry :

1. Shri DEV RAJ CHAKRAVARTI, *(Posthumous)*
District Savings Officer,
National Savings Organisations,
Bijnor, Uttar Pradesh.

(Effective date of the award : 21st September, 1975).

On the night of 21st September, 1975 at about 10 P.M., two men armed with revolvers came to the Midwife Training Centre, Bijnor and wanted to meet a woman trainee of the Centre. The chowkidar did not permit them at which they threatened the incharge of the Centre and the chowkidar.

On hearing the commotion, Shri Dev Raj Chakravarti residing in a nearby building came out and after ascertaining the facts of the case advised the chowkidar to report the matter to Police authorities. Thereupon one of the armed men rushed at Shri Chakravarti with his revolver outstretched. Unmindful of the great risk, Shri Chakravarti overpowered the individual and snatched away the revolver. Seeing this, the other individaul fired from his pistol at Shri Chakravarti who succumbed to the injury that night.

Shri Dev Raj Chakravarti displayed great courage in this action.

2. 291101 Corporal VISHWANATH SHARMA,
Weapon Fitter. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 6th December, 1977).

On the 6th December, 1977 Corporal Vishwanath Sharma, who was returning to his unit on the expiry of his Casual Leave, had to break his journey at Delhi Railway Junction to catch a connecting train to Jodhpur. At about 1340 hours on that day, Sergeant Mange Ram of Air Force Station. Jodhpur, while passing through Company Bagh, opposite Delhi Railway Station, happened to notice two persons trying to pick the pocket of a person sleeping in the lawns of the Company Bagh. On being challenged, both of them attacked Sergeant Mange Ram and pushed him into the hedge. Corporal Vishwanath Sharma, who happened to be there, rushed to his help. The Criminals, who tried to run away, were given hot chase by Corporal Sharma and Sergeant Mange Ram. One of the culprits named Gurdip, whipped out a dagger and stabbed Corporal Sharma in the stomach. Corporal Sharma was immediately rushed to Jayaprakash Narayan Hospital by Sergeant Mange Ram and later to Military Hospital, Delhi Cantonment, for intensive care on 17th December, 1977, where he succumbed to his injuries, the next day. The criminals were later nabbed by the police.

In this action, Corporal Vishwanath Sharma displayed exemplary courage, high sense of comradeship and undaunted determination.

3. Major KANHIYA LAL SHARMA (IC 21170)
Para.

(Effective date of the award : 18th April, 1978)

Major Kanhiya Lal Sharma was an Instructor at the Infantry School, Mhow. On the evening of 18th April, 1978, when a film was being shown at the school, an organised gang of burglars tried to break into the room of an officer. Major Sharma suspecting foul play, came out with a rod and saw a well dressed individual standing in front of the room and another standing on the road near a motor cycle with its engine running. He questioned the person standing on the verandah and, realizing the irrelevance of his replies, moved towards the motor cycle and hit it with the rod. This unnerved the burglars. However, before they could escape Major Sharma caught hold of one of the burglars, when a hand to hand fight ensued. Hearing the commotion, others in the vicinity also rushed to the scene and the burglars were apprehended and handed over to the police. They were later identified as members of a wanted gang operating in the town.

In this action, Major Kanhiya Lal Sharma displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

4. Shrimati ZADINGI,
Buarpui Village Grouping Centre,
District Lunglet, Mizoram.

(Effective date of the award : 2nd July, 1978).

On the 2nd July, 1978, when Smt. Zadingi was collecting fire-wood in the jungle near Buarpui village in Lunglet District of Mizoram, she saw a tiger at a distance of about 3 metres. Without losing her presence of mind, Smt. Zadingi struck the advancing tiger in the head with her axe. While struggling with the tiger, she sustained an injury on her left arm. The tiger staggered away to nearby bushes. Despite her injury, Smt. Zadingi continued to watch the tiger with a view to hit it a second time, in case it attacked her again. The tiger, however, did not appear and later the villagers found it dead.

In this act, Shrimati Zadingi displayed exemplary courage, presence of mind and determination of a very high order.

5. Captain JAYANT THAPA (IC 30365)
3 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 3rd September, 1979)

On the night of 2nd/3rd September, 1978, Captain Jayant Thapa was the Officer-in-Charge of the team detailed to lay mines in an area adjacent to one of our border posts in the Northern Sector. After completing his job, Captain Thapa guided back two of the three protection parties deployed ahead of the minefield. On his return to the post, he was informed that the third protection party had entered the minefield inadvertently. Realising the gravity of the situation, Captain Thapa rushed towards the minefield. He found that one other Rank who had strayed into the minefield the leader of his party who had gone to rescue him had got their legs blown off due to a mine blast. Captain Thapa entered the minefield and himself evacuated both the wounded personnel, one by one, by lifting them physically and carrying them out of that area.

In this action, Captain Jayant Thapa displayed exemplary courage, professional competence and devotion to duty of a very high order.

6. 5235877 Naik DIL BAHADUR BURATHOKI,
3 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 3rd September, 1979)

On the night of 2nd/3rd September, 1978, Naik Dil Bahadur Burathoki, along with three Other Ranks, was deployed to protect a party which was laying mines near our border post, somewhere in the Northern Sector. On 3rd September, 1978, while withdrawing from their position, Naik Dil Bahadur Burathoki and his party of three Other Ranks inadvertently entered one of the minefields. Unaware of its existence, the last man in the column, Rifleman Kansi Ram Gurung, stepped on a mine and his leg was blown off. Immediately Naik Burathoki realised the gravity of the situation and made his wounded comrade sit down on the spot. He then took one of his comrades by hand and guided him

to a place of safety. He re-entered the minefield and tried to help Rifleman Thapa who could not move because of shock. Naik Burathoki, consequently, lifted him up physically and carried him through the minefield to a place of safety. Thereafter, he returned to evacuate the injured comrade. In this attempt, he too stepped upon a mine which blew off his leg.

In this action, Naik Dil Bahadur Burathoki displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

7. 4451150 Sepoy NIRBHAY SINGH, *(Posthumous)*
Sikh Light Infantry.

(Effective date of the award : 21st September, 1978).

On the 21st September, 1978, Sepoy Nirbhay Singh along with three athletics, was returning from a cross-country run. When they were about 300 yards short of the unit lines, the leading athlete Lance Havildar Bachan Singh, was suddenly attacked by a wild elephant which caught hold of him in its trunk. Seeing the danger, Sepoy Nirbhay Singh rushed towards the wild elephant shouting and gesticulating, in utter disregard to his own safety. These acts of Sepoy Nirbhay Singh enraged the elephant. It flung away Lance Havildar Bachan Singh and, trumpeting loudly, charged at Sepoy Nirbhay Singh. The tusker grabbed him in its trunk and dashed him on the ground several times and killed him on the spot.

In this action, Sepoy Nirbhay Singh displayed exemplary courage, high sense of gallantry and devotion to duty of a very high order.

8. Squadron Leader PURAN CHANDRA SINGH RAUTELA, VSM (9576),
Aeronautical Engineering (Electronics).

(Effective date of the award : 11th October, 1978).

An aircraft was lost in October, 1967, in Kulkila Glacier area of Lahaul and Spiti at a height between 15,000 and 18,000 feet. In October, 1978, Squadron Leader Puran Chandra Singh Rautela, VSM, volunteered to undertake the expedition to locate the wreckage of the aircraft and the body of the pilot. Despite adverse weather conditions, he undertook the journey as winter snow would have obliterated the traces of the wreckage. On the way he saved the life of a Japanese tourist suffering from acute pulmonary oedema at a height of about 13,000 feet by offering him the limited oxygen available with the team. Though deserted by the majority of porters, he continued to lead the expedition with determination under dangerous glacier conditions at —30° deg. C and wind speed of 50 knots. During the course of operation, on one occasion, he was buried neck-deep in loose snow. In spite of this he inspired confidence in the members of his team through personal example and carried on the expedition and ultimately discovered and wreckage of the aircraft lost nearly 11 years ago and carried the wreckage back to the base.

In this act, Sqn. Ldr. Puran Chandra Singh Rautela displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

9. Squadron Leader JAGAT NARAIN SHUKLA (8548) ADM.

(Effective date of the award : 25th October, 1978).

On the afternoon of 25th October 1978, a labourer, Shri Mithoo Lal, was buried alive approximately at a depth of 30 feet in a well of the Sewage disposal system, under construction in the New Project Area of Air Force Station, Agra. No one was willing to undertake rescue operations for fear of being trapped in the well. At about 1430 hours when Squadron Leader Jagat Narain Shukla learnt about the disaster, he rushed to the scene of accident and informed the Police and Fire Brigade. These agencies arrived promptly, but as the cave in was about 20 feet and the exact position where the labourer lay buried, was not known, none was prepared to enter the well.

Realising the situation, Squadron Leader Shukla himself jumped into the pit and commenced rescue operations. On seeing his example some other labourers joined the rescue and Shri Mithoo Lal was rescued after four hours' effort.

In this action, Squadron Leader Jagat Narain Shukla displayed initiative, courage and determination of a very high order.

10. 2570042 Sepoy OMMEN, *(Posthumous)*
Madras.

(Effective date of the award : 4th November, 1978).

Incessant and heavy rains in November, 1978, had caused unprecedented floods in the Edappazhanji river (near Trivandrum). People living in the catchment area of the river, were surrounded by 8 to 10 feet deep water. On the 4th November, 1978, Sepoy Ommen who was detailed, along with his platoon, to rescue the marooned people, rescued 20 women and children from the marooned areas. While this rescue operation was in progress, the Platoon Commander was informed that another house had been washed away and the inmates were helplessly clinging to nearby trees. The level and flow of water in the river had started rising very fast. Unmindful of the grave danger involved, Sepoy Ommen volunteered to save the stranded people, jumped into the river and started swimming across the river. In the process, the rope tied to his waist snapped and Sepoy Ommen was swept away by the strong current and was drowned.

In this action, Sepoy Ommen displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

11. GO-NYA AE(CIV) HARBHAJAN SINGH,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 6th November, 1978).

Heavy snow fall on the Srinagar-Leh Road during the period from 5th to 19th November, 1978, had blocked traffic and more than 200 Army and civil vehicles carrying a large number of passengers, including foreign tourists who were returning from Ladakh, were stranded between Drass and Gumri without food and shelter in freezing cold.

Shri Harbhajan Singh, Assistant Engineer (Civil), who was Incharge of this Sector, mobilised all his available resources for snow clearing operation. Undaunted by the adverse climatic and high altitude conditions and the inhospitable terrain ,he supervised the operation and succeeded in restoring the road for traffic, by working day and night within a short period of less than two weeks which otherwise, would have taken four weeks' time. His technical ability and personal supervision immensely contributed to this achievement and averted loss of valuable lives and property of the stranded passengers.

In this action, Shri Harbhajan Singh displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

12. G/31247 Operator Excavating Machinery KUNDAN SINGH,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 6th November, 1978).

Heavy snow fall on the night of 5th/6th November, 1978, had blocked traffic on the Srinagar-Leh Road and, consequently, more than 200 Army and civil vehicles with a number of passengers, including a large number of foreign tourists who were returning from LADAKH, were stranded at Drass without food and shelted in freezing cold. Operator Excavating Machinery Kundan Singh of 351 Road Maintenance Platoon volunteered for and started clearing the snow with his dozer, in utter disregard to his personal safety. Operating dozers at such a high altitude in freeing cold and under treacherous weather prone to frequent avalanches, calls for exceptional skill and daring. Undeterred by these, OEM Kundan Singh worked day and night and cleared the road for traffic within the short period of two weeks. By his commendable performance, OEM Kundan Singh was instrumental in saving valuable lives of the stranded passengers and Government property.

In this action Operator Excavating Machinery Kundan Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

13. G/105286 PIONEER TIKARAM,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 19th November, 1978).

Heavy snow fall between 6th and 19th November, 1978, dislocated all traffic on Srinagar-Leh Road and more than 200 Army and Civil vehicles with a large number of passengers, including foreign tourists returning from Ladakh, were stranded without food and shelter in freezing cold.

Snow clearing operations at an altitude of over 3200 metres, where efficiency of equipments/plants get considerably reduced due to effects of height and freezing cold, are hazardous and extremely difficult. In order to enable the stranded vehicles and passengers to move to safer places, Pioneer Tika Ram was detailed to clear the road. In utter disregard to his personal safety and comfort, he undertook the task and operated his dozer in an inhospitable terrain and under adverse climatic conditions. In this process he got buried under a snow avalanche which came without warning from the top of a hill and sustained injuries. Undaunted, he went to work again after he had been rescued and continued to clear the road of snow, till he was finally evacuated for medical treatment.

In this action, Pioneer Tika Ram displayed exemplary courage, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

14. Squadron Leader DAVIS JOSEPH ACHATES DEFIGUEIREDO (9844), Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 24th January, 1979)

On the 24th January, 1979, Squadron Leader David Joseph Achates Defigueiredo was participating in a seven aircraft Republic Day Flypast rehearsal formation. On completion of the rehearsal as he commenced a descending turn to the left, a hydraulic malfunction occurred in the control circuit of the aircraft. The rate of roll to the left suddenly increased and Squadron Leader Defigueiredo found that the control stick of the aircraft had jammed and could not be centralised. As the aircraft rolled on to its back, the nose dropped into a steepening descent. In such an uncontrollable situation, most of the pilots would have considered it justified to abandon the aircraft even at an adequate height. However, without losing his presence of mind, he continued to apply various corrective measures in order to save the precious aircraft. Finally he could pull the aircraft out of its dive barely at 600 ft above the ground and brought it safely back to the base.

In this action, Squadron Leader David Joseph Achates Defigueiredo displayed courage and determination, professional competence and devotion to duty of a high order.

15. G/129360 PIONEER JAGAT SINGH, General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 14th February, 1979)

Due to shortage of Excavating Machinery Operators in the General Reserve Engineer Force Task Force, the services Pioneer Jagat Singh were being utilised to operate a dozer. He was deployed with his dozer on a fresh formation cut duty on the approach road to Tipaimukh Dam. For this purpose, it was imperative to open another axis from the other side of Tipaimukh Dam. Since the dozer could not reach the other side of the Dam on account of steep rocky slopes on the road alignment, the only way open was to take the dozer through the river Tulval. The river was over-flowing and no one was willing to take the dozer across the river. Pioneer Jagat Singh volunteered to undertake this very dangerous task and unmindful of the great danger he reached the other side with his dozer. He had started cutting the rock when suddenly there was a massive rock slide and he alongwith the dozer, was almost buried under the debris and sustained severe injuries. Without caring for his own safety and the injuries sustained by him, he made valiant efforts while the rock slide was still active and pulled the dozer away and saved the valuable machine.

In this operation Pioneer Jagat Singh displayed undaunted courage, determination and devotion to duty of a very high order.

16. G/31039 Operator Excavating Machinery HARKA SINGH,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 20th February 1979)

On the night of 19th/20th February, 1979, the stormy weather accompanied by torrential rains and heavy snow fall in Kinnaur District of Himachal Pradesh resulted in serious damage to the Hindustan-Tibet road at various places and this completely disrupted the traffic carrying troops and essential supplies.

Operator Excavating Machinery Harka Singh of a Road Maintenance Platoon was detailed with his dozer to clear four major avalanche affected tracts of the road. In sub-zero temperature conditions he worked almost round the clock in complete disregard to his own safety and comfort. Undeterred by the constant threat of shooting boulders and active land slides, he operated his machine, cleared all the four tracts, one after the other, and the road was opened for traffic, in a record time.

In this action, Operator Excavating Machinery Harka Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

17. G/106818 Superintendent B/R UPI KUMARAN BALAKRISHNAN, General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 7th March, 1979).

During the period from 28th February to 7th March, 1979 Lahaul and Spiti valley of Himachal Pradesh was subjected to heavy snow fall and massive avalanches accompanied by rock falls. Many houses in the area were completely buried and destroyed and fatal accidents and serious injuries were sustained by the inhabitants. The 10 to 20 feet deep snow completely disrupted the road traffic beyond the Rohtang pass as well as the fortnightly helicopter service.

In order to enable the civil Administration to carry out immediate rescue and relief operations, 35000 Square feet area of the helipad at Istingri and the six Kilometres stretch of road from Istingri to Kevlong were required immediately to be cleared of snow for helicopters and vehicles. It was also essential to remove the heavy snow from the nearby buildings for relief operations.

Superintendent Balakrishnan, who was incharge of a detachment of 397 Road Maintenance Platoon (GREF) stationed in the area, undertook the snow clearance operation. The task had to be carried on under conditions of sub-zero temperature and continuous snow blizzards. At times, he had to move from one place to another to supervise the task. One day while on such a move, he missed the track in blizzards and fell into a ditch and got buried unto his neck. He was saved due to timely rescue by a GREF employee who perchance was working nearby.

Superintendent Kumaran Balakrishnan thus displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

18. G/148156 Leading Hand ARJUN SINGH,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 7th March, 1979)

There was heavy snow fall and avalanches during the period from 28th February to 7th March, 1979, in Lahaul and Spiti Valley of Himachal Pradesh. Many houses were buried under the snow, fatal and serious injuries were sustained by the inhabitants and all road communication in the area were disrupted.

Leading Hand Arjun Singh of 1650 Pioneer Company (GREF) who was incharge of a small detachment at Istingri near Kevlong and who was assigned the task of carrying out snow clearing from the roofs of the Departmental buildings, completed it with the help of his men and saved the Government of heavy loss to its properties. He also organised a team to clear the 10 to 20 feet deep snow from the helipad at Istingri for the helicopters to land.

On the 6th March, 1979, when the entire garrison was busy in snow clearing operation, Leading Hand Arjun Singh heard a cry for help from a nearby ditch. He rushed to the spot and found the Officer-in-Charge of his Detachment buried unto his neck in snow. In completely disregard to his own safety, he managed to rescue him under circumstances where a slight slip on his part could have proved fatal to his own self.

Leading Hand Arjun Singh thus displayed courage, initiative and devotion to duty of a very high order.

19. G/31159 Operator Excavating Machinery MEHANTI RAM, General Reserve Engineer Force. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 9th March, 1979)

On the 9th March, 1979, Operator Excavating Machinery Mehanti Ram of a Road Maintenance Platoon was detailed, with his dozer, to re-grade road alignment at a particular

point on a new road under construction in South Mizoram. By moving the earth on to the valley side with the dozer blade, he gradually reduced the level of the road alignment. At about 0700 hours, while he was [illegible] to move the accumulated earth on to t[illegible] earth gave way and the machine started toppling towards the valley. Instead of jumping out of the dozer to save his own life, Operator Excavating Machinery Mehanti Ram preferred to save the valuable machine. In the process, however, he was thrown ahead of the dozer by a sudden jerk, and was crushed to death.

In this action, Operator Excavating Machinery Mehanti Ram displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

20. Squadron Leader GULZARINDER SINGH BRAICH (8762), Flying (Pilot)

(Effective date of the award : 14th March, 1979)

During March, 1979. Lahaul and Spiti valley in Himachal Pradesh were subjected to heavy snowfall and avalanches which had disrupted all traffic to and from the valley and had caused considerable loss to life and property of the inhabitants. Squadron Leader Gulzarinder Singh Braich was detailed to undertake relief supply missions to the area. Undeterred by the adverse weather conditions and the consequent flying hazards, he flew eight sorties with 6,700 kilograms of supplies for the affected people.

Squadron Leader Gulzarinder Singh Braich thus displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

21. Squadron Leader NARINDER SINGH (8675), Flying Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 26th March, 1979)

On the 26th March, 1979. Squadron Leader Narinder Singh was engaged in a supply dropping mission in Ladakh. The dropping zone was located in a narrow river valley surrounded by high ranging hills. The operation, therefore, constant manoeuvring of the aircraft through sharp turns with consummate skill. During a critical turn at an altitude of about 13,000 feet his aircraft suddenly developed an engine failure and started losing height and power rapidly. In complete disregard to his own safety Squadron Leader Narinder Singh skilfully manoeuvered his aircraft and diverted it to an advance landing ground located at a distance of about 45 kilometres from the dropping zone, and effected a safe landing with the help of only one engine. By his presence of mind and cool confidence in a critical phase of flight. Squadron Leader Narinder Singh not only saved a valuable aircraft but also ensured the delivery of the urgently required rations at the destination.

In this action, Squadron Leader Narinder Singh displayed professional skill, courage, determination and devotion to duty of a very high order.

22. Captain SUBIR KUMAR MOOKERJEE (IC 30461), Artillery.

(Effective date of the award : 12th April, 1979)

On the 11th April, 1979, in the industrial town of Jamshedpur there was wide-spread violence, arson and looting. The civil administration requisitioned Army assistance to deal with the situation. Two columns of an Artillery Regiment were deployed to contain the violence and bring back normalcy. Captain Subir Kumar Mookerjee was commanding one of the columns.

On the next day a violent mob encircled a group of houses and was about to set fire to them. Captain Mookerjee rushed to the scene deployed his column and tackled a section of the armed mob from a bye-lane. Seeing Captain Mookerjee rushing towards them with four jawans, the mob fired with country made revolvers and threw spears at him. Taking advantage of smoke and cover of the buildings he ordered firing of five rounds as a result of which four armed miscreants were injured. The remaining miscreants, who tried to flee, were overpowered and the spears and swords carried by them were seized. Their other followers were tackled from two directions and were dispersed.

In the meantime, wide-spread looting arson and destruction of property by a mob was reported from another area of the town. Members of one community were the main target of attack and most of them had sought refuge in a small building. Captain Mookerjee dispersed the violent mob and protected the helpless people until they were evacuated to safe places. By his tactful handling of the situation and by firing only six rounds, Captain Mookerjee was able to hold at bay a mob of about 500 armed men. He compelled the mob to disperse, quickly redeployed his men around the building and thereafter, with the addition of another detachment, conducted systematic and bold clearing operation, in complete disregard to his own safety.

In this action Captain Subir Kumar Mookerjee, displayed exemplary courage, leadership, determination and devotion to duty of a high order.

23. Squadron Leader MANOHAR PANDURANG RANE (9763), Flying (Pilot). *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 1st May 1979)

On the 1st May, 1979, Squadron Leader Manohar Pandurang Rane was detailed to fly the Chief of the Staff from Halwara to Barnala, and back. On completion of the task, when he was flying the helicopter back to base, the rotor blade spacing cables broke and severed two of the three control rods of the rotor head. This left him with no control over the altitude or descent path of the helicopter. He assessed the performance of what little control remained and gradually managed to bring the aircraft into a slightly nose-up descent path. Realising that he would not be able to slow down the descent rate, he shut down the engine as there was no other alternative. Unfortunately the helicopter crashed and caught fire and Squadron Leader Rane lost his life.

Squadron Leader Manohar Pandurang Rane thus displayed courage, professional skill and devotion to duty.

24. Flying Officer ATUL TRIVEDI (13805), Flying (Pilot).

(Effective date of the awrd : 8th May, 1979)

On the 8th May, 1979 Flying Officer Atul Trivedi was authorised to fly a Marut Fighter aircraft for a training flight. About 10 minutes after the take-off, the aircraft developed tail vibrations and nose-down oscillations. Without losing his presence of mind, the officer analysed the situation quickly and discovered that the main and the stand-by trimmers of the aircraft were not functioning. He also noticed that the Radio-Telephonic Communication System of the aircraft had also failed simultaneously and hence it was not possible for him to seek guidance and help of the Flying Control.

Flying Officer Trivedi handled the multiple emergency situation which exemplary professional competence, returned to base without a radio telephonic system carried out a flapless approach and landing at a speed of 200 knots and brought the aircraft to a halt without any further damage. Flying Officer Trivedi thus not only saved a valuable aircraft under circumstances of grave risk to his own life but also made it available for a more valuable purpose of post accident investigation.

In this action, Flying Officer Atul Trivedi displayed exemplary courage, professional competence, undaunted determination and devotion to duty of an exceptional order.

25. Lieutenant Colonel SURINDER SINGH BAJWA (IC 13014), Punjab

(Effective date of the award : 25th June, 1979)

Army was called out in aid to civil authorities to enforce the surrender of the Central Industrial Security Force personnel who had forcibly seized the armoury at Bokaro. The barrack and the armoury were well fortified with wire obstacles, ditches and sand bag bunkers built on roof tops and in all the first floor windows of all barracks around the armoury.

On the night of 24th-25th June, 1979, an infantry battalion was moved in to cordon the Central Industrial Security Force barracks. Major Sukhdev Singh, who was commanding the Company entrusted to lay seige of the armoury, sustained a fatal bullet injury. Lieutenant Colonel Surinder Singh Bajwa then took over the command, led the Company with determination and was successful in seizing the armoury with minimum loss to his troops.

In this action, Lieutenant Colonel Surinder Singh Bajwa displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of a high order.

26. Captain RAJ KUMAR CHAND (IC 34189), Punjab.

(*Effective date of the award* : 25*th June*, 1979)

On the 23rd June, 1979, army was called out in aid to civil authorities to enforce surrender of approximately 1500 men of the Central Industrial Security Force at Bokaro who had defied Government orders and had forcibly seized the armoury. The barracks and the armoury were well fortified with barbed wires, ditches and with improvised sand bag bunkers built on roof tops and in first-floor-windows of the barracks.

On the night of 24-25th June, 1979, an infantry battalion was moved in to cordon the barracks and to obtain the surrender of Central Industrial Security personnel. Captain Raj Kumar Chand, who was commanding a platoon entrusted with the task of flushing out the Central Industrial Security Force personnel from the barracks, had to get engaged in a hand to hand fight with them and was injured in the leg by a bullet. But he kept leading his men and was evacuated only after the task was completed.

In this action, Captain Raj Kumar Chand displayed courage, leadership, determination and devotion to duty of a high order.

27. Captain KANWAR SARAVJIT SINGH PANWAR (MR 3223), Army Medical Corps.

(*Effective date of the award* : 25*th June*, 1979)

Army was called out in aid to civil authorities on 23rd June, 1979, to enforce surrender of the personnel of the Central Industrial Security Force, who had defied the orders of the Government and had forcibly seized the armoury at Bokaro. The barracks and the armoury were well fortified with barbed wire obstacles, ditches and sand bag bunkers built on roof tops and in the windows at first floor of the barracks.

On the night of 24/25th June, 1979, an infantry battalion was moved in to cordon the CISF personnel. Major Sukhdev Singh, who led his company for the task sustained a fatal bullet injury and at this Captain Kanwar Saravjit Singh Panwar of the Medical Corps rushed forward to the front line, amidst rifle fire, to administer first aid to the injured officer who could not be saved. Thereafter, despite great personal risk, he continued to remain in the front and administer first aid to the casualties as their evacuation under heavy fire was very difficult. In the process, he himself was hit by a bullet and was seriously injured. He was evacuated to Bokaro Hospital, where he later recovered.

In this action, Captain Saravjit Singh Panwar displayed exemplary courage and devotion to duty of a very high order.

28. 2468081 Sepoy MANJIT SINGH, Punjab. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award* : 25*th June*, 1979)

On the 23rd June, 1979, Army was called out in aid to civil authorities to enforce surrender by Central Industrial Security Force personnel at Bokaro who had forcibly seized the armoury. The barracks and the armoury were well fortified with wire obstacles, ditches and sand bag bunkers built on roof tops and in the first-floor-windows of the barracks.

On the night of 24th-25th June, 1979, an infantry battalion was moved in to cordon the Central Industrial Security Force barracks. The cordon was soon completed. Very effective rifle fire was being directed at the Army personnel from the barracks adjacent to the armoury and, as a result, the Northern approach to the armoury was completely sealed. Sepoy Manjit Singh, along with his section, was ordered by his section comcander to rush forward and flush out the Central Industrial Security Force personnel from the residential barracks ahead. In complete disregard to his own safety, he dashed forward into the building. Suddenly a volley of fire by Central Industrial Security Force personnel struck Sepoy Manjit Singh, and he was killed on the spot. However, inspired by his act of bravery, the men of his section made a vigorous charge at the Central Industrial Security Force personnel and compelled them to surrender.

In this action, Sepoy Manjit Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

29. 2470429 Sepoy JASWINDER SINGH, Punjab. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award* : 25*th June*, 1979)

On 23rd June, 1979 Army was called out in aid to civil authorities to obtain the surrender of Central Industrial Security Force personnel stationed at Bokaro who had forcibly seized the armoury in contravention of Government orders. The barracks and the armoury were well fortified with wire obstacles, ditches and sand bag bunkers built on roof tops and in the windows at first floor floor of the barracks.

On the night of 24th-25th June, 1979, an infantry battalion was moved in to cordon the Central Industrial Security Force barracks and to obtain surrender of Central Industrial Security Force personnel. The cordon was soon complete. While the company was storming the Armoury and the office building, very effective rifle fire was being directed by Central Industrial Security Force personnel who had taken positions on roof tops. The company which was entrusted to cordon the barrack located behind the Sabha Hall, was ordered to move forward and take the surrender of the personnel in that barrack by physical assault. Sepoy Jaswinder Singh who was engaged in close quarter battle inside the buildings, was in the lead of his section. In the process of flushing out the Central Industrial Security Force personnel from the buildings, Sepoy Jaswinder Singh received a bullet injury from a bunker and was seriously injured. He was evacuated to Hospital, where he succumbed to his injuries on 28th June, 1979.

In this action, Sepoy Jaswinder Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

V. K. DAR, Secy to the President

New Delhi, the 8th May 1980

No. 38-pres/80.—The President is pleased to institute a medal for the Armed Forces for recognition of long service and in this behalf to make, ordain and establish the following ordinances which shall be deemed to have effect from the date of issue of this notification.

Firstly.—The medal shall be styled and designated the "तिंशत् वर्ष दीर्घ सेवा मैडल" "30 YEARS LONG SERVICE MEDAL"

Secondly—The medal shall be circular in shape, made of cupro nickel, 35 millimetres in diameter and fitted to a plain horizontal bar with standard fitting. It shall have embossed on its obverse the State Emblem and the inscriptions "तिंशत् वर्ष" "30 YEARS" below it along the rim, and "दीर्घ सेवा" "LONG SERVICE" on either side of the State Emblem along the rim. On its reverse it shall have crest of three Services in the centre with rising sun on the top. A sealed pattern of the medal shall be deposited and kept.

Thirdly—The medal shall be worn suspended from left breast by a silk ribbon which shall be 32 millimetres in width. The ribbon shall be of orange colour background with three vertical stripes of Red, Dark Blue and Light Blue of 2 millimtres in width in the centre and with two equal parts of the remaining ribbon on the two sides.

Fourthly—The medal shall be awarded to Armed Forces personnel serving in the Army, the Navy and the Air Force, on completion of unblemished service of 30 years and more on the date of issue of this notification or thereafter.

Fifthly—The miniature medal which may be worn on certain occasions by recipients shall be half of the size of the medal and a sealed pattern of the said miniature medal shall be deposited and kept.

Sixthly—It shall be competent for the President to cancel and annul the award of the medal to any person and also to restore it subsequently.

Seventhly—It shall be competent for the Government to frame such instructions as may be necessary to carry out the purposes of these ordinances.

S. NILAKANTAN
Deputy Secretary to the President

PRIME MINISTER'S OFFICE

New Delhi-110011, the 1st May 1980

No. 21/1630/79-PMA.—Shri V. P. Bhatia, officiating Additional Private Secretary to the former Prime Minister, who was granted Earned Leave for 74 days with effect from 29th January, 1980 to 11th April, 1980 vide this Office Notification of even number, dated 28-1-80, has been granted further extension of Earned Leave for 45 days with effect from the 12th April, 1980 to 26th May, 1980 (both days inclusive).

2. The services of Shri V. P. Bhatia, who is a Stenographer, Grade 'B' of the CSSS cadre of the Ministry of Home Affairs, shall stand replaced at the disposal of the Ministry of Home Affairs after the expiry of leave.

OM PARKASH, Private Secy. to the Prime Minister

MINISTRY OF PLANNING

(DEPARTMENT OF STATISTICS)

New Delhi-110001, the 5th April 1980

RESOLUTION

No. H-11021/22/79-Coord.—In continuation of this Department's Resolution of even number dated the 28th March, 1980, the name of Shri S. M. L. Bhatnagar, Secretary, Department of Statistics, may be substituted for Shri S. S. Puri, Secretary, Planning and Statistics, appearing in para 2 of this Department's Resolution of even number dated the 16th November, 1979.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India, Part 1, Section 1.

Ordered also that a copy of the Resolution be communicated to all the Ministries/Departments to the Government of India/all State Governments/administrations of Union Territories and all other concerned.

R. N. SAXENA, Dy. Secy.

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(COMPANY LAW BOARD)

New Delhi-110001 the 1980

ORDERS

No. 27(26)80-CL-II.—In pursuance of clause (ii) of sub-section (1) of Section 209A of the Companies Act, 1956 (I of 1956), the Central Government hereby authorises Shri P. J. Thomes Kutty, Deputy Director, Inspection in the Department of Company Affairs for the purposes of the said Section 209A.

No. 27(26)80-CL-II.—In pursuance of clause (ii) of sub-section (1) of Section 209A of the Companies Act, 1956 (I of 1956), the Central Government hereby authorises Shri P. K. Bansal, Inspecting Officer, in the Department of Company Affairs for the purposes of the said Section 209A.

2. The Central Government hereby revokes the earlier authorisation issued in favour of Shri P. K. Bansal as Assistant Inspection Officer, Bombay vide Order No. 27(5)76-CL-II dated 12-8-76.

S. BALARAMAN, Under Secy.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-110001, the 3rd May 1980

No. 13019/5/79-GP.II.—In partial modification of this Ministry's Notification No. 13019/5/79-GP. II, dated the 23rd April, 1980 the President is pleased to nominate Shri Gopi Chand, Advocate, 588/16A, Chandigarh, as a non-official Member of the Home Minister's Advisory Committee for Chandigarh for the year 1980-81.

S. C. SHARMA, Dy. Secy.

MINISTRY OF SOCIAL WELFARE

New Delhi-1, the 26th April 1980

RESOLUTION

No. 1-32/77-CSWB(Vol. II).—In partial modification of the Ministry of Social Welfare's Resolution No. 1-32/77-CSWB dated 22nd April 1978, the Government of India is pleased to nominate Shri Anil Bordia, Joint Secretary, Ministry of Education & Culture (Deptt. of Education) on the General Body of the Central Social Welfare Board *vice* Smt. Anjani Dayanand.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to :—

1. All Members of the Central Social Welfare Board.
2. All the State Governments/Union Territories.
3. All the Ministries/Departments of the Government of India.
4. President's Secretariat.
5. Planning Commission.
6. Lok Sabha/Rajya Sabha Secretariat.
7. Cabinet Secretariat.
8. Press Information Bureau, New Delhi.
9. Prime Minister's Office.
10. The Accountant General Central Revenue, New Delhi.
11. Department of Company Affairs, New Delhi.
12. Regional Director, Company Law Board, Kanpur.
13. Registrar of Companies, New Delhi.
14. Secretary, CSWB, Parliament Street, New Delhi.
15. All Chairmen, State Social Welfare Advisory Boards.
16. PSs to Governors/Administrators/Lt. Governors/Chief Commissioners of States/Union Territories.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. N. BAHADUR, Director (SD)

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1980